Indian Streams Research Journal
ISSN 2230-7850
Impact Factor : 3.1560(UIF)
Volume-5 | Issue-2 | March-2015
Available online at www.isrj.org

इलेक्ट्रॉनिक मी डया की शक्षा: एक अध्ययन

रजनीश कुमार झा

शोध छात्र, मेवाड़ वश्व वद्यालय, चत्तौड़गढ़, राजस्थान.

सारांश :- पछले डेढ़ दशक में मी डया के वस्तार के साथ साथ इलेकट्रॉनिक मी डया के शक्षण का भी काफी तेजी से वस्तार हुआ। मजेदार बात ये रही है क इस शक्षा के वकास का स्तर संख्यात्मकता के साथ साथ गुणात्मक भी रहा है। अ धकांश वश्व वद्यालयों में पहले मी डया की शक्षा या तो अंग्रेजी वभाग में हुआ करती थी या फर हिंदी वभाग में । ले कन बदलते वक्त में मी डया के तेजी से हो रहे वस्तार ने अलग से वभाग खोलने को मजबूर होना पड़ा । मतलब हम कह सकते हैं क अब मी डया शक्षा ...अनेक वश्व वद्यालयों में स्वतंत्र वभाग बन चुका है ।

प्रस्तावना :-

पहले समान्य तौर पर जहां भी पत्रकारिता की पढ़ाई होती थी उसमें जोर समाचार पत्र पर होता था..ले कन बदलते वक्त ने इलेक्ट्रॉनिक वभाग या कहें तो टीवी पत्रकारिता की पढ़ाई भी एक शाखा के रूप में वक सत हो गई है...कई वश्व वद्यालयोंमें या तो संयुक्त रूप से या फर अलग से टीवी पत्रकारिता की पढ़ाई होने लगी है। आज हम इस टीवी पत्रकारिता शक्षा की बात भी इस लए करने को मजबूर हुए हैं क बाजार में कई ऐसे संस्थान है जो टीवी पत्रकारिता के ग्लैमर में फंसे छात्रों को ना केवल लूट रहे हैं बल्कि अध कचरा ज्ञान भी दे रहे हैं । लहाजा अब समय है क हम टीवी पत्रकारिता की शक्षा में होने वाली समस्याओं का शोध परख जिक्र करें...

टीवी पत्रकारिता की शक्षा क्यों?

वैसे तो हर वषय में स्पेश लष्ट लोगों की जरूरत होती है..मसलन डॉक्टर, वकील , आदि। पत्रकारिता की पढ़ाई को शुरू हुए भारत में लगभग 75-80 साल हो गई है...पत्रकारिता की पढ़ाई शुरू करने का गौरव भारत में पी पी संह को जाता है..जिन्होनें लाहौर में सबसे पहले पत्रकारिता की पढ़ाई शुरू की थी। उस समय केवल समाचार पत्रों का बोल बाला था...भारत में 1991 में जब खाड़ी युद्ध के दौरान केबल टीवी का पर्दापण हुआ तब से टीवी का व्यापक वस्तार होने लगा। कई निजी चैनल समाचार चैनल लेकर आ गए...शुरूआत जी ने सुभाष चंद्रा ने की...उनको भारत में पहला निजी टीवी चैनल शुरू करने का गौरव हा सल है...उससे पहले भारत में टीवी तो था ले कन लोगों को केवल दूरदर्शन के भरोसे रहना पड़ता था ।

पर वक्त बदला 1991 के बाद मानो केबल क्रांति ने भारत में टीवी के बाजार में क्रांति ला दी। पहले अंग्रेजी न्यूज और फर धीरे –धीरे धीरे छा गया

एक नजर-भारत में दूरदर्शन और समाचार चैनलों के वकास यात्रा की:

भारत में दूरदर्शन की शुरूआत

दूरदर्शन का पहला प्रसारण **15** सतंबर, **1959** को प्रयोगात्मक आधार पर आधे घण्टे के लए शै क्षक और वकास कार्यक्रमों के रूप में शुरू कया गया। उस समय दूरदर्शन का प्रसारण सप्ताह में सर्फ तीन दिन आधा-आधा घंटे होता था। तब इसको 'टेली वजन इं डया' नाम दिया गया था बाद में **1975** में इसका हिन्दी नामकरण 'दूरदर्शन' नाम से कया गया। दूरदर्शन ने धीरे धीरे अपने पैर पसारे और दिल्ली में **1965** ,मुम्बई में **1972** , कोलकाता औरचेन्नई **1975** में इसके प्रसारण की शुरुआत कया गया ।

15 अगस्त **1965** को प्रथम समाचार बुलेटिन का प्रसारण दूरदर्शन से कया गया था। तब से लेकर नेशनल चैनल पर रात **8.30** बजे प्रसारित होने वाला राष्ट्रीय समाचार बुलेटिन आज भी बदस्तूर जारी है। **1982** में दिल्ली में आयोजित ए शयाई खेलों के प्रसारण से श्वेत और श्याम दिखने वाला दूरदर्शन रंगीन हो गया। देश में पहली बारराष्ट्रमंडल खेलों के दौरान दूरदर्शन का प्रसारण एचडी सग्नल पर ही कया गया। हमारे देश में खाड़ी युद्ध के समय यानी नब्बे के दशक में कई निजी चैनलों ने टेली वजन पर दस्तक दिया। आज 2014 में हमारे देश टीवी चैनलों की संख्या7**00** से अ धक हैं ।

भारत में समाचार चैनलों की वकास यात्रा

` देश में टेली वजन की शुरुआत सरकारी हाथों से दूरदर्शन के जरिए हुई और **1965** में **15** अगस्त को पहले बुलेटिन का प्रसारण हुआ, ये बात तमाम रिकॉर्ड्स में दर्ज है। ये भारतीय पत्रकारिता का 'प्रयोगवादी दौर' हैं क्यों क उस दौर में संसाधन बेहद सी मत थे या यूं कहें क नहीं के बराबर थे, क्यों क दूरदर्शन को खबरों के लए आकाशवाणी के संसाधनों पर निर्भर रहना पड़ता था। ले कन प्रयोग के इस दौर से समाचार प्रसारण के फलक का वस्तार हुआ और करीब **33** साल बाद यानी **1998** तक भारत में टीवी पत्रकारिता के एक नए युग की शुरुआत हुई, जब प्राइवेट चैनलों के खलाड़ी इस क्षेत्र में पूरी तरह से उतरे। हालां क ज़ीटीवी पर समाचारों की शुरुआत पहले हो चुकी थी, ले कन पूरी तरह **24** घंटे के समाचार चैनल लेकर पहले स्टार ग्रुप और फर ज़ीटीवी ने **1998** में अपनी पारियां शुरु कीं। स्टार ग्रुप के चैनल ने भारत के मशहूर टीवी प्रस्तोता डॉ. प्रणय रॉय से हाथ मलाया और उनकी कंपनी एनडीटीवी स्टार के न्यूज़ चैनल के लए कंटेंट मुहैया कराने लगी। फरवरी **1998** से शुरु हुआ स्टार-एनडीटीवी का सल सला **2003** तक चला जब स्टार अपने बलबूते भारत में समाचार चैनल लेकर आया और एनडीटीवी ने भी हिंदी और अंग्रेजी में **2** समाचार चैनल उतार दिए। इससे पहले ये बता देना जरूरी होगा क एनडीटीवी के कंटेंट पर आधारित स्टार का न्यूज़ चैनल और ज़ीटीवी के समाचार चैनल के कंटेंट भले ही देश में तैयार होते थे, ले कन इनका प्रसारण वदेशों से यानी हांगकांग और संगापुर से होता था क्यों क भारत से अप लं कंग की अनुमति इन्हें नहीं थी। स्टार ग्रुप को वदेशी समूह होने के चलते अप लं कंग की अनुमति मलने में और देर लगी, जब क ज़ीटीवी में समूची पूंजी भारतीय होने की वजह से उसे पहले देसी धरती से अप लं कंग की अनुमति मल गई थी। हालां क स्टार और ज़ी दोनों ही के न्यूज़ चैनलों पर शुरुआती दौर में अंग्रेजी का प्रभुत्व था और अंग्रेजी के ज्यादा बुलेटिन प्रसारित होते थे। ले कन बाद में हिंदी के बुलेटिनों की संख्या बढ़ी और तकरीबन आधे घंटे अंग्रेजी और आधे घंटे हिंदी के बुलेटिन्स का फ़ॉर्मेट दोनों चैनलों में चलने लगा। ज़ी के हिंदी बुलेटिन में अंग्रेजी- म श्रत हिंदी यानी 'हिंग्लिश' का ज्यादा इस्तेमाल था, तो स्टार-एनडीटीवी के बुलेटिन की उर्दू- म श्रत भाषा उसकी खा सयत थी।

भारत में समाचार के कारोबार में तेजी **2001** में आई, जब इं डया टुडे ग्रुप के टीवी सेक्शन टीवी टुडे का चैनल 'आजतक' दिल्ली से लांच कया गया। इससे पहले दूरदर्शन के मेट्रो चैनल पर प्रसारित होनेवाला टीवी टुडे का 'आजतक' कार्यक्रम दर्शकों में अपनी खास पहचान बना चुका था, जिसका चैनल को जबर्दस्त फायदा मला और **24** घंटे के समाचार के बाजार में 'आजतक' को अपना पांव जमाते देर नहीं लगी। टीवी कार्यक्रम के रूप में 'आजतक' का प्रसारण **DD** मेट्रो पर **1995** में शुरु हुआ था। समाचार चैनल के रूप में ये **31** दिसंबर **2000** को वजूद में आया और हिंदी में चौबीस घण्टे प्रसारित होने वाला देश का पहला समाचार चैनल बन गया।

शुरुआत में चैनल के रूप में लांच होने पर 'आजतक' का संपादकीय नेतृत्व उदय शंकर के हाथों में था, ले कन 'आजतक' की खास पहचान बनानेवालों में पत्रकार कमर वहीद नकवी प्रमुख थे, जिन्होंने हमेशा पर्दे के पीछे रहते हुए शो को बखूबी अंजाम तक पहुंचाया। हालां क वो शुरुआत में चैनल का हिस्सा नहीं रहे, ले कन उदय शंकर **2003** में स्टार न्यूज़ की टीम में शा मल हो गए तो 'आजतक' को चलाने के लए फर कमर वहीद नकवी को बुलाया गया। कमर वहीद नकवी ने 'आजतक' में लंबी पारी खेली और **2012** में उन्होंने अवकाश ले लया। यहां बता दें क 'आजतक' जब डीडी मेट्रो चैनल का कार्यक्रम था, तो दिल्ली के कनॉट प्लेस में उसका दफ्तर हुआ करता था। चैनल की लां चंग दिल्ली के झंडेवालान एक्सटेंशन में स्थिति वी डयोकॉन टॉवर से हुई और **2012** के सतंबर में ये चैनल नोएडा की फल्म सटी में अपने नए दफ्तर इं डया टुडे मी डयाप्लेक्स में आ गया। चैनल के नोएडा आने से पहले कमर वहीद नकवी इससे वदा हो चुके थे और कमान सु प्रय प्रसाद ने संभाली जो टीवी टुडे ग्रुप के सबसे अनुभवी लोगों में से हैं।

'आजतक' के **12** साल के सफर के दौरान टीवी टुडे ने **3** और समाचार चैनल लांच कए। एक चैनल अंग्रेजी समाचारों का है- हेडलाइंस टुडे । हिंदी में एक और चैनल **2005** में लांच कया गया-तेज़ जिसका मकसद था फटाफट अंदाज में खबरों को पेश करना। इसके अलावा **2008** में दिल्ली-एनसीआर की खबरों के लए दिल्ली आजतक को लांच कया गया। इस तरह अब टीवी टुडे के **4** चैनल एक साथ चल रहे हैं। चैनल के रूप में लांच होने के बाद 'आजतक' ने सबसे पहले **2001** के गुजरात भूकंप की जबर्दस्त कवरेज की। इसके बाद तो एक से बढ़कर एक मामलों की कवरेज और प्रसारण इसके नाम हो गए।

'आजतक' के आने से साल-दो साल के अंदर सबसे बड़ा झटका ज़ीटीवी के न्यूज़ चैनल ज़ी न्यूज़ और स्टार-एनडीटीवी के चैनल को लगा और इसी के साथ नए-नए प्राइवेट समाचार चैनलों की शुरुआत का रास्ता भी प्रशस्त हो गया। **2003** में एनडीटीवी से अलग होकर स्टार ग्रुप ने अपना अलग से समाचार चैनल लांच कया, जिसकी सीईओ थीं रवीना राज कोहली और संपादक थे संजय पुग लया जो पहले 'आजतक' के भी जाने-माने एंकर

रह चुके थे और इसके बाद ज़ी न्यूज़ को भी 'आजतक' के लांच होने के बाद झटकों से उबारने में काफी कामयाब रहे थे।

स्टार ग्रुप ने एनडीटीवी से अलग होकर अपना चैनल लांच करने की तैयारियां **2002** में ही शुरु कर दी थीं। **2003** में मुंबई से बेहद तड़क भड़क के साथ 'आपको रखे आगे' की टैगलाइन के साथ लांच हुए पूरी तरह वदेशी पूंजी वाले स्टार न्यूज़ ने टीवी समाचार के कारोबार को नया कलेवर देने की को शश शुरु की, ले कन उसकी को शशों को तब ग्रहण लगने लगा, जब देश में इलेक्ट्रॉनिक मी डया में शत-प्रतिशत वदेशी पूंजी का कड़ा वरोध शुरु हो गया। चुं क प्रंट मी डया में सर्फ **26** फीसदी वदेशी पूंजी लगाने की ही अनुमति थी, लहाजा केंद्र सरकार ने इलेक्ट्रॉनिक मी डया पर भी यही पाबंदी लगानी पड़ी।

इसके बाद सतंबर **2003** में स्टार न्यूज़ को चालू रखने के लए नए सरे से **MCCS** नाम की कंपनी बनाई गई और **74** फीसदी हिस्सेदारी के लए कोलकाता के आनंद बाजार पत्रिका समूह को कंपनी से जोड़ा गया। मार्च **2004** से स्टार न्यूज़ स्टार ग्रुप और **ABP** ग्रुप की हिस्सेदारी में आ धकारिक रूप से शुरु हुआ। स्टार और आनंद बाजार पत्रिका समूह यानी **ABP** का साथ करीब **8** साल चला और **2012** के अप्रैल महीने में स्टार ने **ABP** से अपना ब्रांड वापस लेने का फैसला कर दिया। इसके बाद **1** जून **2012** से ये चैनल **ABP** न्यूज़ के रूप में काम करने लगा। **MCCS** के तहत बांग्ला और मराठी के भी दो चैनल और एक बांग्ला एंटरटेनमेंट चैनल लांच कये गए, जो अब स्टार की जगह **ABP** की ब्रां डंग से जाने जाते हैं।

'आजतक' से स्टार न्यूज़ (अब **ABP** न्यूज़) में शुरुआती समानता ये थी क तमाम ऐसे कर्मचारी उसमें काम कर रहे थे, जो 'आजतक' में भी काम कर चुके थे। साथ ही ज़ी न्यूज़ के भी चुने हुए धुरंधर संजय पुग लया की टीम में शा मल होकर स्टार न्यूज़ के सदस्य बने। चुं क स्टार की प्रतिद्वंद् वता मुख्य रूप से 'आजतक' से थी, लहाजा चैनल के लए कर्मचारियों की टीम बनाते हुए इस बात का खास ख्याल रखा गया क जो लोग 'आजतक' की खबरिया मान सकता से वा कफ हों, वही उसकी काट हो सकते हैं। स्टार न्यूज़ को चलाने के लए **MCCS** नाम की कंपनी बनने के बाद संपादकीय परिवर्तन भी हुए और संजय पुग लया की जगह उदय शंकर ने ले ली, जो तब तक 'आजतक' के न्यूज़ डायरेक्टर हुआ करते थे। स्टार न्यूज़ में आने के बाद उदय शंकर ने भी नई ऊंचाइयां छुईं। मर्डोक परिवार ने उनकी प्रतिभा को पहचाना और शायद पहली बार एक भारतीय पत्रकार को वदेशी मी डया समूह के टॉप मैनेजमेंट में शा मल होने का गौरव हा सल हुआ, **2007** में उदय शंकर स्टार इं डया के हेड बना दिए गए। उदय शंकर के बाद से शाजी ज़मां ने स्टार न्यूज़ (अब **ABP** न्यूज़) की कमान संभाली। स्टार न्यूज़ ने लां चंग के

बाद मुंबई में हुई भीषण बारिश के दौरान जोरदार कवरेज की और 'आजतक' समेत तमाम चैनलों को पीछे छोड़ दिया।

1998-99 में सबसे पहले भारतीय निजी समाचार चैनल के रूप में अपनी खास पहचान बनानेवाले ज़ी न्यूज़ को **2001** के बाद के झटकों से उबरने पर दिल्ली, उत्तर-पश्चिम भारत और गुजरात में अपने बड़े दर्शक वर्ग का हमेशा फायदा मलता रहा। इस चैनल में काफी संपादकीय बदलाव हुए। चैनल को स्था पत करनेवाले शैलेष, आलोक वर्मा, उमेश उपाध्याय, रजत शर्मा के बाद शाजी ज़मां, संजय पुग लया, फर वनोद कापड़ी, वष्णु शंकर, सतीश के. सं ह, अलका सक्सेना से लेकर सुधीर चौधरी तक जैसे तमाम जाने-माने टीवी पत्रकार ज़ी न्यूज़ के संपादक बने और चैनल को बड़े मुकाम तक पहुंचाने की को शश करते रहे। ले कन तमाम को शशों के बावजूद ये चैनल टीआरपी की होड़ में चौथे नंबर से ऊपर नहीं चढ़ सका, एक-दो मौके अपवाद हो सकते हैं।

उधर, स्टार ग्रुप का साथ छोड़ने के बाद एनडीटीवी ने भी अपने चैनल लाने की तैयारी शुरु की और **2003** में सफलतापूर्वक **2** चैनल लांच कर दिए। हिंदी चैनल के लांच के लए 'आजतक' के ही मशहूर चेहरे दिबांग को अपने साथ जोड़ा। 'खबर वही सो सच दिखाए' की टैगलाइन के साथ शुरु हुए हिंदी चैनल 'एनडीटीवी इं डया' ने खबरों के प्रसारण के मामले में तो अलग संपादकीय लाइन की वजह से अपनी खास पहचान बनाए रखी, ले कन टीआरपी की होड़ में ये चैनल पीछे ही रहा। दिबांग के आक्रामक तेवर पर कई बार डॉ. प्रणय रॉय की संपादकीय नीतियां भारी पड़ती दिखीं जिसकी वजह से खबर देखने वालों के लए तो 'एनडीटीवी इं डया' पसंदीदा चैनल बना रहा, ले कन मक्स-मसाला के तौर पर खबरे परोसे जाने में फसड्डी ही साबित हुआ। वैसे एक तरह से देखा जाए तो **NDTV** देश का सबसे पुराना मी डया हाउस है। **2012-13** में इसके **25** साल पूरे हो चुके हैं। दूरदर्शन के लए नवंबर **1988** से **'The World This Week'** न्यूज़ मैगजीन की प्रस्तुति और कंटेंट तैयार करने के बाद इस मी डया हाउस ने स्टार ग्रुप के साथ हाथ मलाया और करीब **9-10** साल उन्हें **24** घंटे के चैनल के लए कंटेंट उपलब्ध कराते रहे। आजकल **(2013)** अनिंद्यो चक्रवर्ती इसके हिंदी चैनल 'एनडीटीवी इं डया' के प्रमुख हैं, जब क सुनील सैनी, मनोरंजन भारती, रवीश कुमार, मनीष कुमार, अ भषेक शर्मा, नि ध कुलपति इसके जानेमाने संपादकीय चेहरे और प्रस्तोता हैं। मशहूर टीवी प्रस्तोता वनोद दुआ भी एनडीटीवी इं डया पर खास करंट अफेयर्स कार्यक्रम पेश करते हैं।

ज़ीटीवी से अलग होने के बाद अपना मी डया प्रोडक्शन हाउस 'इं डपेंडेंट न्यूज़ स र्वसेज़ प्राइवेट ल मटेड' चलानेवाले और 'आपकी अदालत' जैसे कार्यक्रम से मशहूर हुए पत्रकार रजत शर्मा भी अपना समाचार चैनल लेकर आए जिसका नाम उन्होंने रखा- 'इं डया टीवी'। **20** मई **2004** को 'आपकी आवाज' की टैगलाइन के साथ लांच इस चैनल ने शुरुआत में तो बॉलीवुड के कास्टिंग काउच और नेताओं के सेक्स स्कैंडल दिखाकर लोक प्रयता बटोरने की को शश की, ले कन लंबे समय तक खबरिया हथकंडों में कामयाबी नहीं मली, और ना ही रजत शर्मा को अपने चेहरे की ब्रां डंग का कोई फायदा मला तो उन्होंने आ खरकार खांटी खबरिया संपादक औऱ ज़ी न्यूज़ में अपने सहयोगी रहे वनोद कापड़ी को अपने साथ जोड़ा। वनोद कापड़ी की अगुवाई में इं डया टीवी ने कम वक्त में ही बुलंदियां हा सल कर ली और लगातार वो टीआरपी के चार्ट में पहले से तीसरे नंबर तक अपनी जगह बनाने में कामयाब दिख रहा है। रजत शर्मा **1992** से ही ज़ीटीवी से अपने खास टॉक शो 'आपकी अदालत' के साथ जुड़े हुए थे। वो ज़ी के डायरेक्टर भी रहे। ज़ी से अलग होने के बाद एनडीटीवी के साथ चल रहे स्टार न्यूज़ में वो 'जनता की अदालत' लेकर आए, जो आज भी उनके अपने चैनल पर चल रहा है।

देश में समाचार चैनलों की दुनिया का वस्तार **2002** के बाद से बड़ी तेज़ी से हुआ। दूरदर्शन के मेट्रो चैनल से 'आजतक' कार्यक्रम की वदाई के बाद दूरदर्शन को भी एक **24** घंटे के समाचार चैनल की जरूरत महसूस

हुई। 3 नंवबर 2003 को मेट्रो चैनल के प्लेटफॉर्म पर ही 24 घंटे के समाचार चैनल डीडी न्यूज़ की शुरूआत की गई, जिसकी कमान सरकारी लोगों के हाथ में होने के अलावा 'आजतक' से अपनी पहचान बनानेवाले प्रमुख टीवी पत्रकार दीपक चौर सया को भी सौंपी गई थी। हालां क बाद में वो इस चैनल से अलग हो गए, ले कन DD न्यूज़ अपनी खास पहचान बनाने में जरूर कामयाब हुआ है। 2013 में इसे नई ब्रें डंग और लोगो के साथ पेश कया गया है और BBC के पूर्व भारत संपादक संजीव श्रीवास्तव की अगुवाई में चलनेवाले इसके प्राइम टाइम शो न्यूज़ नाइट ने तो टीआरपी की होड़ में भी अहम उपलब्धि हा सल करके चैनल को टीआरपी चार्ट में ऐतिहा सक स्तर तक पहुंचा दिया।

निजी समाचार चैनलों की देश में शुरुआत हुई, तो अखबार निकालनेवाले समूहों ने भी इसमें हाथ आजमाना शुरु कया। टाइम्स ग्रुप ने तो अंग्रेजी में समाचार चैनल लांच कया, ले कन दैनिक जागरण के प्रकाशन समूह ने हिंदी चैनल लाने की योजना बनाई और अप्रैल 2005 में चैनल 7 के नाम से चैनल लांच भी कर दिया। ले कन जागरण ग्रुप इस चैनल को लंबे समय तक चलाने में नाकाम रहा और आ खरकार 2006 में इस चैनल की बड़ी हिस्सेदारी नेटवर्क 18 और राजदीप सरदेसाई के नेतृत्व वाले Global Broadcast News Ltd. (GBN) ग्रुप ने खरीद ली। इसके बाद चैनल का नाम IBN7 हो गया और अब इस चैनल की टैगलाइन है- 'खबर हर कीमत पर'। इस तरह ये चैनल बिजनेस चैनल और अंग्रेजी समाचार चैनल चलानेवाले TV 18-नेटवर्क 18 ग्रुप में हिंदी समाचार चैनल के रूप में शा मल हो गया। शुरुआत में इस चैनल की कमान जानेमाने एंकर अरूप घोष के हाथों में थी, इसके बाद अजीत साही और फर 'आजतक' से आए आशुतोष ने मैनेजिंग ए डटर के रूप में इसका संचालन संभाला। संजीव पालीवाल इसके प्रमुख कार्यकारी संपादक हैं। हार्डकोर खबरों और उनके वश्लेषण पर केंद्रित रहना इस चैनल की खा सयत है। च र्चत पत्रकारों राजदीप सरदेसाई,आशुतोष,संदीप चौधरी की अगुवाई में ये चैनल सार्थक बना...अब राजदीप और आशुतोष दोनों ही इस चैनल को बाय -बाय कर चुके हैं। आशुतोष अब राजनीति में हाथ आजमा रहे हैं.चांदनी चैक लोकसभा क्षेत्र से चुनाव भी लड़ा पर हार गए...वहीं राजदीप इन दिनों इस संस्थान से लीव पर हैं । जून 2014 में इस चैनल और टीवी 18 ग्रुप को अब मुकेश अंबानी ने सौ फीसदी खरीद लया है..अब खबर ये है क चैनल की जिम्मेदारी उमेश उपाध्यय को दी गयी है ।...

वत्तीय और कई और क्षेत्रों में हाथ आजमाने वाली कंपनी सहारा इं डया ने भी सन 2000 में इलाक्ट्रानिक मी डया में कदम रखा और सन 2000 में सहारा टीवी लेकर आए, जिस पर शुरुआत में समाचार भी चलते थे और एंटरटेनमेंट प्रोग्राम भी। मशहूर पत्रकार वनोद दुआ इस चैनल पर रोजाना

अपना समाचार आधारित कार्यक्रम प्रतिदिन और शनिवार को अपना साप्ताहिक समाचार आधारित कार्यक्रम परख लेकर आते थे। सहारा ग्रुप ने 2002 -2003 में समाचार के लए सहारा समय नाम से अलग से चैनल लांच कर दिया और मनोरंजन चैनल को भी अलग कर दिया गया। 2004 में मनोरंजन चैनल को सहारा वन नाम दे

दिया गया और फल्मों के लए भी **2** और चैनल लांच कर दिए गए। सहारा इं डया के समाचार चैनल सहारा समय के साथ-साथ कई और क्षेत्रीय चैनल भी लांच कए गए, जो मध्य प्रदेश-छत्तीसगढ़, यूपी-उत्तराखंड, बिहार-झारखंड, राजस्थान, दिल्ली-एनसीआर, मुंबई वगैरह की खबरें दिखाते हैं। सहारा के समाचार चैनलों की कमान बदलती रही है। शुरुआती दौर में राष्ट्रीय सहारा अखबार से जुड़े वभांशु दिव्याल और फर प्रभात डबराल ने काफी समय तक इसका संचालन कया। इसके बाद अरुप घोष-शीरीन की जोड़ी इसे चलाती रही। 'आजतक' के जानेमाने चेहरे पुण्य प्रसून वाजपेयी को भी इसकी कमान दी गई जिन्होंने इसका नाम सर्फ 'समय' कर दिया। इसके बाद स्टार न्यूज़ से जुड़े रहे उपेंद्र राय को भी इसकी जिम्मेदारी सौंपी गई। कुछ दिनों के लए जी के वा संद्र मश्र भी यहां गए पर वो वापस जी लौट आए...कुल मलाकर यहां संपादक आते-जाते रहे ले कन ये चैनल चलता जा रहा है।

मशहूर पत्रकार अनुराधा प्रसाद और पत्रकार से राजनेता बने राजीव शुक्ल की ओर से **1993** से चलाए जा रहे प्रॉडक्शन हाउस **BAG** फल्म्स भी समाचार चैनल लेकर खबरों के बाजार में उतरा। **2007** में लांच हुए इस चैनल की टैगलइन है- 'हर खबर पर नज़र'। अपनी प्रस्तुति की वजह से लांच होने के चार साल के अंदर ये चैनल टीआरपी की होड़ में कई चैनलों को पीछे छोड़ चुका है। इसका संपादकीय नेतृत्व अजीत अंजुम के हाथों में है।

समाचार चैनलों में एक नया नाम **P7** न्यूज़ का भी जुड़ा। 'सच जरूरी है' की टैगलाइन से **24** घंटे के इस चैनल को**Pearls Broadcasting Corporation Limited** की ओर से नवंबर **2008** में नोएडा से लांच कया गया। टीआरपी चार्ट में तो ये चैनल कहीं खास नहीं है, ले कन इसका कामकाज चार साल से अच्छी तरह चलता जा रहा है और **2013** में तो इस ग्रुप की ओर से **2** और चैनल - एक दिल्ली-एनसीआर के लए और एक मध्य प्रदेश-छत्तीसगढ़ के लए - लांच कर दिए गए हैं। इस चैनल से जाने-माने नाम तो नहीं जुड़े हैं, ले कन इसकी प्रस्तुति जरूर कसी हुई और बेहतरीन लगती थी।

हालां क 2014 के नवंबर में इस ग्रुप के सभी चैनल बंद हो गए। चैनल के मा लक केसर संह की वत्तीय अनिय मतताओं ने चैनल को डुबो दिया...साथ ही कई मी डया पर्सन रोड पर आ गए...चैनल बंद होने से पहले यहां के मी डयाक र्मयों ने जो काम कया वह हैरत भरा था..चैनल पर ही सैलरी ना दिए जाने की खबर चला दी...ये शायद वश्व का पहला ऐसा चैनल था जिसके कर्मचारियों ने अपने ही चैनल के खलाफ खबर चला दी

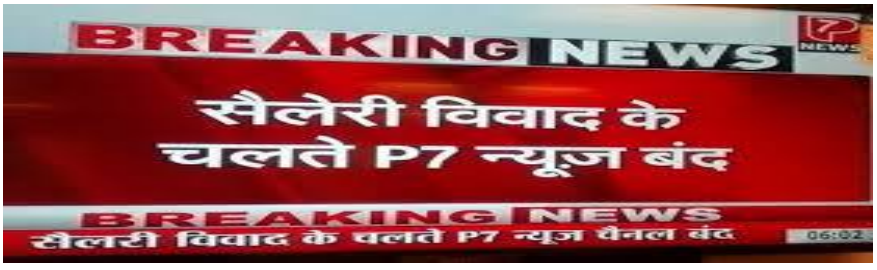

समाचार चैनलों में सयासी हस्तियों की दिलचस्पी जगजाहिर है। **11** फरवरी **2008** को दिल्ली के **ITV** मी डया ग्रुप ने 'देश की धड़कन' की टैग लाइन से इं डया न्यूज़ लांच कया जिसके कर्ता धर्ता कार्तिकेय शर्मा हरियाणा के कांग्रेस नेता वनोद शर्मा के बेटे हैं। वनोद शर्मा के दूसरे बेटे मनु शर्मा दिल्ली के जे सका लाल हत्याकांड में सज़ायाफ्ता हैं और फलहाल जेल में हैं । इस चैनल से **2013** में मशहूर पत्रकार दीपक चौर सया और राणा यशवंत भी जुड़ चुके हैं और चैनल को नई पहचान देने में जुटे हैं। इस चैनल से जुड़े कई क्षेत्रीय चैनल भी हैं- इं डया न्यूज़ हरियाणा, इं डया न्यूज़ मध्यप्रदेश-छत्तीसगढ़, इं डया न्यूज़ बिहार। साथ ही इस चैनल ने अंग्रेजी चैनल

न्यूज़ एक्स को भी खरीद लया है। इस तरह ये एक बड़े मी डया ग्रुप के रूप में उभर रहा है।हालां क अब इं डया न्यूज़ बिहार बंद हो चुका है ...

एक और समाचार चैनल उतार-चढ़ाव को लेकर चर्चा में रहा- वो है - 'लाइव इं डया'। पहले पहल अ धकारी ब्रदर्स ने **2005** के आसपास 'जनमत' नाम से इस चैनल को लांच कया था। इसके बाद इसकी हिस्सेदारी बिल्डर कंपनी **HDIL** को बिक गई और तब इसका नामकरण 'लाइव इं डया' हुआ। एक स्टिंग ऑपरेशन को लेकर हुए ववाद को लेकर **2007** में इस पर पाबंदी भी लगी। इसके बाद इस चैनल ने नए सरे से अपनी पहचान बनानी शुरु की, ले कन अंदरूनी खस्ताहाली ने इसे एक बार फर बिकने को मजबूर कर दिया। अब इसके मा लकान पुणे के कारोबारी हैं। शुरुआत में इस चैनल के साथ हरीश गुप्ता, उमेश उपाध्याय जैसे पत्रकार जुड़े थे, बाद में सुधीर चौधरी इसके संपादक बने और फर सतीश के संह को इसकी कमान मली।बीच में सतीश को संह न्यूज़ एकेसप्रेस गए फर कुछ ही दिनों बाद लौट आए...इस ग्रुप का मराठी न्यूज़ चैनल और अखबार बी चल रहा है । और ये आने वाले दिनों में कई और रीजनल चैनल लेकर मैदान में आ रही है ।

राष्ट्रीय समाचार चैनलों में नवीनतम नाम न्यूज़ नेशन का है, जिसे **2013** में ही लांच कया गया है। चैनल की अगुवाई वरिष्ठ पत्रकार शैलेष कर रहे हैं, जो ज़ी न्यूज़, आजतक जैसे चैनलों में लंबी पारी खेल चुके हैं। साथ ही आजतक और स्टार न्यूज़ के नामी एंकर अजय कुमार भी इससे जुड़े हुए हैं। इसके संपादकीय वभाग में वरिष्ठ पत्रकार सर्वेश तिवारी भी हैं। रोजगार पर खतरे के संकट से गुजर रहे टीवी में काम करनेवाले तमाम युवाओं के लए ये चैनल आशा की करण बन कर लांच हुआ। चैनल से काफी उम्मीदें हैं बशर्ते ये सुचारू रूप से चलता रहे।इस न्यूज़ चैनल में बहुत तेजी से अपनी जगह देश के सर्वोत्त्म 5 चैनलों में जगह बना ली है...इस चैनल ने हाल ही में वस्तार करते हुए

अपना **NEWS NATION** उत्तर प्रदेश भी लॉन्च कया है । शैलेष भी अब न्यूज़ नेशन छोड़ चुके हैं और अभी वो फोकस टीवी के रीजनल चैनलों के सलाहकार हैं ।

समाचारों का प्रसारण राज्यसभा टीवी पर भी होता है, जिसे **2011** में लांच कया गया, हालां क इसकी कोई कारोबारी मान सकता नहीं है और खबरों के चयन का तरीका आम चैनलों से अलग है। ले कन कम वक्त में ही ये चैनल करंट अफेयर्स चैनलों में अपनी खास पहचान बनाने में सफल हुआ है। चैनल की कमान गुरदीप संह सप्पल और राजेश बादल के हाथों में है।

हाल फलहाल लॉंच हुए एक और चैनलों में से एक है न्यूज़ एक्सप्रेस....इस चैनल को **Sai Prasad Media Pvt Ltd** चला रही है....

जुलाई 2011 में इस चैनल को देश का पहला एचडी चैनल कह कर लॉन्च कया गया...शुरूआती दिनों में मुकेश कुमार इस चैनल के हेड थे...बाद में तकरीबन छह महीना पहले फऱवरी में इस चैनल को एक बार फर से रिलॉन्च कया गया....इस बार इं डया टीवी के तेज तर्रार वनोद कापड़ी नेतृत्व करने पहुंचे पर वो भी अपने मकसद में कामयाब नहीं रहे और फर इसे बाय-बाय कह गए... फलहाल इस टचानल का नेतृत्व प्रसून शुक्ला के कंधो पर है...हालां क इस चैनल की वत्तीय स्थिति खाफी खराब है ।. वनोद कापड़ी के समय एक अ भनव प्रयोग भी कया गया...एक कार्यक्रम की एंकर तेजाब से झुलसी लक्ष्मी को बनाया गया जो शायद वश्व इतिहास में पहला मौका था जब कसी चैनल ने इस तरह की लड़की को प्राइम टाइम एंकर बनाया...वाकई वनोद कापड़ी इस बात के लए बधाई के हकदार हैं। इसग्रुप ने मध्यप्रदेश-छत्तीसगढ़ के लए भी एक चैनल लॉन्च कया है ।

2013 में लोगों के सामने एक और चैनल या जिसका नाथ था..फोकस न्यूज़.., ये चैनल कांग्रेस के पूर्व नेता मतंग संह का था जो उन्होनें कांग्रेस के ही नेता और उद्योगपति नवीन जिंदल को बेच दिया..जिंदल ने जी न्यूज़ से परेशाम होकर खुद का मी डया हाउस खड़ा कर दिया ...जिंदल ने बीबीसी के पूर्व रिपोर्टर और वरिष्ठ पत्रकार संजीव श्रीवास्तव को जिम्मेदारी सौंपी ..इस ग्रुप का एक और चैनल फोकस हरियाणा है..दोनों ही चैनल नोएडा से ही संचा लत हो रहा है ।

देश में समाचार चैनलों की होड़ में क्षेत्रीय चैनल भी काफी तेजी से शा मल हुए। इसकी शुरुआत तो सबसे पहले हैदराबाद के इनाडु ग्रुप ने ही कर दी थी, जिसके नेटवर्क में पहले द क्षण भारतीय भाषाओं के और फर ओ डशा, महाराष्ट्र,

गुजरात, उत्तर प्रदेश/उत्तराखंड, बिहार/झारखंड, मध्य प्रदेश/ छत्तीसगढ़ और राजस्थान के लए भी अलग-अलग चैनल आ गए जिन पर समाचारों के अलावा मनोरंजन और करंट अफेयर्स के कार्यक्रम भी प्रसारित होते हैं। इनाडु ग्रुप के मा लक रामोजी राव की अगुवाई में शुरु ये नेटवर्क अब टीवी **18** ग्रुप का हिस्सा बन चुका है।

दिल्ली-एनसीआर की खबरों पर केंद्रित चैनलों में टोटल टीवी का भी नाम आता है, जो 2005 में लांच हुआ। टोटल टीवी यूं तो पहला ऐसा सैटेलाइट चैनल है जो कसी शहर पर केंद्रित हो, हालां क अभी तक ये अपनी बड़ी पहचान बनाने में वफल रहा है।इसके अलावा भी बहुत सारे स्थानीय स्तर और लोकल स्तर पर हमारे यहां चैनल खुल गए हैं....इस चैनल ने हाल ही में 10 साल पूरे कए है , इसके संपादक श शरंजन हैं

टीवी पत्रकारिता की पढ़ाई:

भारत में इलेक्ट्रॉनिक मी डया की पढ़ाई की शुरूआत करने का श्रेय पूणा के फल्म इंस्टीच्यूट को जाता है। अपने शुरूआती दौर से ही ये संस्थान आकाशवाणी और दूरदर्शन के कर्मचारियों को प्र शक्षण का कार्यक्रम कराता रहा है । वर्ष 1965 में दिल्ली में मी डया शक्षा को लेकर एक अहम संस्थान खुला , जिसका नाम भारतीय जनसंचार संस्थान यानी IIMC था। इस संस्थान में भी आकाशवाणी और दूरदर्शन के कर्मचारियों को प्र शक्षण दिया जाने लगा ।

दिल्ली में ही एक और संस्थान खुला...जिसने कुछ ही दिनों में अच्छी पहचान बना ली । उस संस्थान का नाम है जा मया म लया इस्ला मया । यहां के मास कम्निकेशन रिसर्च सेंटर ने बड़ी संख्या में टेली वजन निर्माता तैयार कए,। बदलते वक्त में आईआईएमसी और एमसीआरसी में भी रे डयो और टीवी पत्रकारिता की पढ़ाई शुरू हो गई और काफी संख्या में लोग पढञकर बाहर आने लगे ...मसलन एक बेहतर प्रोफेशनल निकलने लगे जो मी डया के क्षेत्र में काम करने लगे।

ले कन इलेकट्रॉनिक मी डया की दृष्टि से देंखे तो उसके लए वर्ष 1997 काफी अहम रहा । इस वर्ष पत्रकारिता के एकमात्र वश्व वद्यालय माखनलाल चतुर्वेदी पत्रकारिता एवं जनसंचार व व ने मास्टर ऑफ ब्रॉडकास्ट जर्न लज्म की पढ़ाई

शुरू की। यहां अलग से एक केंद्र बनाया गया । इसे संयोग ही कहेंगे जब इस सेंटर की शुरूआत हुई तब ये शोधार्थी इस संस्थान से पत्रकारिता में स्नातकोत्तर की पढ़ाई कर रहे थे। इस समय ब्रॉडकास्ट डपार्टमेंट का जिम्मा डॉ श्रीकांत संह के पास था..जिन्होंने इस सेंटर को अपनी मेहनत से काफी बेहतर बनाया और कई अच्छे प्रोफेशनल्स तैयार हुए। इस केंद्र ने 2002 में यूजीसी के दिशा-निर्देशों के आधार पर इलेकट्रॉनिक मी डया में एमएसएसी पाठ्यक्रम आरंभ कया । इस प्रकार पूरे देश में टीवी पत्रकारिता और रे डयो पत्रकारिता में दो मास्टर डग्री चलाने वाला ये पहला केंद्र बन गया । इसके बाद ये डग्री , एवीआरसी, इंदौर, कुरूक्षेत्र वश्व वद्यालय समेत उत्तर बारत और द क्षण भारत के कई वश्व वद्यालयों में शुरू हुआ।

तब से लेकर अब तक तकरीबन दस –बारह सालों में कई सरकारी, प्राइवेट , डीम्ड वश्व वद्यालयों में भी इलेक्ट्रॉनिक पत्रकारिता की पढ़ाई होने लगी ।

निजी संस्थानों में मारवाह स्टू डयों प्रमुख है । मारवाह स्टू डयों का जिक्र मैं इस लए अपने शोध प्रपत्र में करना चाहता हूं क्यों क इस संस्थान ने मी डया के तकनीकी प्रोफेशनल्स बनाए...मसलन – कैमरा संचालव, नान लनियर ए डटर, साउंड रिकॉर्डर आदि। ये बात और थी क इन संस्थानों की मान्यता नहीं थी और फीस काफी ज्यादा थी।

पत्रकारिता शक्षण के प्रमुख संस्थान

एफटीआईआई, पूणे
आईआईएमसी
जा मया म लया इस्ला मया
माखनलाल चतुर्वेदी पत्रकारिता वश्व वद्याल के अलावा आज मौजूदा समय में कई, राज्य व व, निजी व व, डीम्ड वश्व वद्यालय के साथ साथ मी डया घरानों के संस्थानों में भी पढ़ाई हो रही है।

टीवी पत्रकारिता में पढ़ाएं क्या?

सवाल काफी अहम है क हम टीवी पत्रकारिता में पढ़ाएं क्या? इस मसले को समझने के लए हमें ये जानना होगा क आ खर टीवी पत्रकारिता में क्या और कन चीजों की आवश्यकता होती है ।

इनकी मदद से चलता है 24 घंटे का न्यूज़ चैनल

अब हम इस बात का जिक्र कर रहे हैं क आ खर इन चैनलों में कामकाज कैसे होता है और वे कौन कौन से वभाग है जिसकी मदद से हम और आप न्यूज़ चैनल देखते है:सामान्य तौर पर कसी भी चैनल में जो तीन वभाग होते हैं वे हैं-

क. आउटपुट

ख. इनपुट

ग. टेक्निकल

इन तीनों वभागों के अलावा भी बहुत सारे डपार्टमेंट होते हैं जो चैनल के लए काम करते हैं...इसमें ट्रांसपोर्ट, गेस्ट कॉ र्डनेशन, मार्केटिंग, शड्यू लंग, डस्ट्रीब्यूशन आदि...ले कन अपने इस आलेख और शोध में हम मुख्य तौर पर तीन वभागों का जिक्र करेंगे..सबसे पहले बात करते हैं ..आउटपुट की...

आउटपुट डपार्टमेंट

एग्जेक्यूटिव प्रोड्यूसर- चैनल के मुख्य संपादकीय कार्यकारी, जो आम तौर पर न्यूज़ डायरेक्टर या मैनेजिंग ए डटर को रिपोर्ट करते हैं और चैनल के संपादकीय और प्रोडक्शन से जुड़े मामलों के प्रभारी होते हैं। एग्जेक्यूटिव प्रोड्यूसर ऐसे कई कार्यक्रमों के भी प्रभारी हो सकते हैं, जिनके कांसेप्ट और प्रोडक्शन में उनकी भू मका हो। आम तौर पर खास कार्यक्रमों के वरिष्ठ निर्माताओं को भी एग्जेक्यूटिव प्रोड्यूसर का दर्जा दे दिया जाता है। ले कन ये पूरी व्यवस्था अलग अलग चैनलों के प्रबंधन और कामकाज के हिसाब से अलग-अलग हो सकती है। समाचार चैनलों में चुं क ज्यादातर सीधा प्रसारण होता है, लहाजा एग्जेक्यूटिव प्रोड्यूसर **FPC** तय करने, उन्हें लागू करने पर ध्यान देने और भ वष्य की रूपरेखा तय करने जैसे चैनल ऑपरेशन से जुड़े काम करते हैं। वहीं मनोरंजन चैनलों और ऩॉन-न्यूज़ चैनलों में उनका काम कार्यक्रमों के प्रव्यू और उन्हें हरी झंडी देने का भी हो सकता है।

डप्टी एग्जेक्यूटिव प्रोड्यूसर- चैनल के प्रमुख कर्ता-धर्ता, संपादकीय अ धकारी या नंबर **2** कार्यकारी हो सकते हैं, जो संपादकीय और प्रोडक्शन के मामले समझते हों और उनसे जुड़े हों।

एसो सएट एग्जेक्यूटिव प्रोड्यूसर- कार्यक्रमों और बुलेटिन्स के रोजाना के मामलों का प्रभार देखते हैं। फॉरवर्ड प्लानिंग करते हैं और शफ्ट पर भी निगरानी रखते हैं। चैनल के मैनपॉवर के प्रबंधन का भी काम इनके जिम्मे।

सीनियर प्रोड्यूसर- आम तौर पर शफ्ट के प्रभारी, बुलेटिनों और कार्यक्रमों के प्रसारण के लए जिम्मेदार, अलग-अलग खास कार्यक्रमों के निर्माण से भी जुड़े हो सकते हैं

एसो सएट सीनियर प्रोड्यूसर/ प्रोड्यूसर- सीनियर प्रोड्यूसर के सहयोगी, बुलेटिनों और अलग-अलग खास कार्यक्रमों की तैयारी, निर्माण और प्रसारण की जिम्मेदारी संभालते हैं

एसो सएट प्रोड्यूसर/ ए सस्टेंट प्रोड्यूसर- चैनल के रोजमर्रा के कामकाज, रनडाउन, टिकर, स्क्रिप्टिंग, पैकेजिंग के कामकाज देखते हैं

रनडाउन प्रोड्यूसर- एसो सएट प्रोड्यूसर/ ए सस्टेंट प्रोड्यूसर स्तर के स्टाफ, बुलेटिन और कार्यक्रमों के रनडाउन के प्रबंधन का जिम्मा

पैकेजिंग प्रोड्यूसर- प्रोड्यूसर से लेकर ए सस्टेंट प्रोड्यूसर और ट्रेनी स्तर तक के तमाम स्टाफ जिन पर न्यूज़ स्टोरीज़ की पैकेजिंग की जिम्मेदारी हो, वी डयो ए डटर्स से तालमेल बिठाना प्रमुख काम

पैनल प्रोड्यूसर- पैनल कंट्रोल रूम की कमान संभालते हैं, बुलेटिन और कार्यक्रमों को अबाध तरीके से ऑन एयर करने का जिम्मा

लाइन प्रोड्यूसर- आमतौर पर मनोरंजन और नॉन-न्यूज़ करंट अफेयर्स चैनलों में स्टाफ के प्रबंधन का काम देखते हैं

फील्ड प्रोड्यूसर- इस पर आउटडोर शूटिंग के प्रबंधन की जिम्मेदारी होती है इनपुट डपार्टमेंट-न्यूज़ चैनल में कमोबेश इपुट वाला ही पद होता है,...इनपुट का काम रिपोर्टर स्ट्रिंगर और आउटपुट के बीच एक माध्यम का काम करता है...आउटपुट को जो खबरें चाहिए उसे उपलब्ध कराना इनपुट का काम होता है ।

टेक्निकल डपार्टमेंट- टीवी चैनल में टेक्निकल डपार्टमेंट का भी अहम रोल होता है...टेक्निकल डपार्टमेंट के तहत वी डयो एडीटर, पीसीआर, एमसीआर, औ बी बैन वाले आते हैं..जो व भन्न स्तरों पर चानल के सुचारू प्रसारण में सहयोग करते हैं

डस्ट्रीब्यूशन डपार्टमेंट- मौजूदा समय में टेली वजन चैनलों की सफलता **TRP** और **GRP** के पैमाने पर देखा जाता है... लहाजा सबसे बड़ा माध्यम डस्ट्रीब्यूशन डपार्टमेंट का होता है ...आजकल **TATA SKY , DTH, VIDEOCON DTH, SURYA DTH, DD DIRECT**, **REALINCE DTH** आदि डीटीएच प्लेटफॉर्म हैं जहां ये कंपनिया अच्छी खासी रकम लेकर चैनल आम दर्शकों को दिखाते हैं...इसके अलावा स्थानीय स्तर पर **DG CABLE** और **HATHWAY** केबल भी हैं जो ये सु वधें उपलब्ध करवाती है

मार्केटिंग डपार्टमेंट-और आ खर में सबसे अहम रोल होता है मार्केटिंग वभाग का...मौजूदा समय में कोई भी टीवी चैनल चलाना आसान काम नहीं है...अगर कहें टीवी चैनल चलाना हाथी पालना जैसा काम है तो अतिश्योक्ति नहीं होगी...अगर आप अपने चैनल को व्यवस्थित ढंग से चलाना चाहते हैं तो इसके लए आपको मार्केटिंग टीम मजबूत रखना होगा...ता क ये टीम आपके चैनल के लए वज्ञापन ला सके

इतने सारे डपार्टमेंट में अगर आप मार्केटिंग डपार्टमेंट को छोड़ दें तो बाकी सारे लोग पत्रकारिता के संपादकीय और टेक्नीकल की पढ़ाई की जरूरत होती है । लहाजा हमें ये तय करना होगा क आ खरकार इन लोगों को पढ़ाया क्या जाए। रांची वश्व वद्यालय में एसो सएट प्रोफेसर देवव्रत संह अपने एक आलेख में लखते हैं क ' इलेक्ट्रॉनिक मी डया के पाठ्यक्रम को लेकर कई उलझने हैं । छात्रों को क्या पढ़ाया जाए इसको लेकर अध्यापकों में ही तरह तरह के राय हैं । कुछ लोगों की राय है क केवल टीवी की पढ़ाई होनी चाहिए वहीं कुछ लोग रे डयो और वेब को भी इसके साथ जोड़ना चाहते हैं " हालां क डॉ देवव्रत मानते हैं क जिस तेजी से मी डया का कनवर्जेंस हो रहा है वैसे में मी डया को अलग अलग रूप में पढ़ाना लगभग असंभवबनता जा रहा है ।

इलेक्ट्रॉनिक मी डया पाठ्यक्रमों में दूसरा चलन इन्हें केवल इलेकट्रॉनिक पत्रकारिता पर केंद्रित करना है। इसका एक कारण नित नए खुलने वाले न्यूज़ चैनलों में नौकरी की अ धक संभावना है। आज टेली वजन प्रोडक्शन में हमें आज सीधे छात्रों को वी डयो कैमरा ,ए डटिंग, साउंड, लाइटिंग और प्रोडक्शन तकनीक सखानी होगी ता क छात्रों को नौकरी के लए आवश्यक कौशल सीख पाएं। पाठ्यक्रमों को इस प्रकार से भी तैयार कए जाने की आवश्यकता है क बच्चों को मी डया और टीवी पत्रकारिता का आधारभूत ज्ञान भी दिया जाए।

व्यवहारिक प्र शक्षण बिना सब जीरो

मी डया में आप कागजी शक्षा जितना दे दो जब तक व्यवहारिक शक्षा नहीं मलेगी छात्रों में ज्ञान का टोटा रहेगा। मी डय का काफी कुछ भ वष्य उसके तकनीक पर निर्धरित हैं । अगर आप तकनीक से दो चार नहीं होगे तो आप फर टीवी, रे डयो और वेब पत्रकारिता तो ठीक से समझ नहीं पाएंगे। जिसके पास जितनी तकनीकी दक्षता होगी वह उतना ही सक्षम होगा। इलेकट्रॉनिक मी डया की पढ़ाई पूरी तरह प्रैक्टिकल पर केंद्रित है क्यों क ये तकनीक पर आधारित खेल है ।

छात्रों के सामने एक और समस्या आती है ...अनेक बार जरूरी मशीन और शक्षक होने के वावजूद व्यवहारिक प्र शक्षण इस लए नहीं मल पाता है क कई दफा उनको पढ़ाने वाले शक्षक को ही व्यवहारिक ज्ञान नहीं होता है । कसी भी टेली वजन प्रोडक्शन के अभ्यास के लए दो से तीन घंटे का वक्त लगता है पर वभागों में टाइम टेबल 45 से एक घंटे तक का होता है । इलेकट्रॉनिक मी डया शक्षकों के लए नया परिवेश तैयार करना होगा..हलां क ये परिवेश तैयार करना कहीं से आसान नहीं है ।भारतीय बाजार में इलेकट्रॉनिक मी डया के नाम पर ढेरों पुस्तकें बाज़ार में उपलब्ध नहीं है । बाजार में अभी भी टेली वजन प्र शक्षण की हिन्दी में काफी कम कताबें हैं । शक्षको को इस दिशा में पहल करने की जरूरत है ।

पाठ्यक्रम पूरा करने के बाद मलेगी नौकरी**?**

व्यवसायिक पाठ्यक्रम जब भी आप कर रहे होते हैं उस समय जेहम में यही सवाल रहता है क हमें कोर्स पूरा करने के बाद नौकरी मल जाएगी या नहीं । पढ़ाई पूरी करने के बाद छात्र से उम्मीद की जाती है क जब वो मार्केट में जाएगा तो वह एक बेहतर प्रोफेशनल के रूप में काम करेगा। कई बार ऐसी समस्या आती है क जब प्र शक्षण के बाद छात्र मी डया उद्योग में काम करने जाता है तो वहां वह फसड्डी साबित होता है या फर कहें तो वह उस पैमाने पर खरा नहीं उतरता है जिस पर उसे उतरना चाहिए। छात्रों को तब लगता है क उसने जो लाखों रूपए खर्चने के बाद पाठ्यक्रम कया वह बेकार हो गया। मेरा कहना है क कभी भी छात्रों को इस स्तर के लए तैयार नहीं कया जाना चाहिए। हम छात्रों को को मी डया उद्योग के लए ही तो तैयार करते हैं। इस लए होना यह चाहिए क जब वह पढ़ाई करके बाहर निकले और काम करे...त क वह कह सके क जिस संस्थान से पास होकर वह आया है उस संस्थान ने उसे बेहतर प्र शक्षण दिया । मी डय संस्थानों को मी डय घरानों के तौर तरीकों को ध्यान में रखकर प्र शक्षम देना चाहिए।

कसी संस्थान की सफलता मापने ता एक आधार यह भी है क उसके यहां से कतने छात्रों का प्लेसमेंट होता है । मौजूदा माहौल में प्लेसमेंट कराना एक बड़ी समस्या है । ऐसे समय जब इस तरह की मी डया व्यवसाय में आपको कसी तरह का वज़नपन देखने को नहीं मलेगा। कुछ मी डया घरानों को छोड़ दे तो अब भारत में ही कई ऐसे मी डया घराने हैं जो खुद का संस्थान चलाते हैं...ऐसी परिस्थिति में बाहर से पढ़कर आए छात्रों को नौकरी मलना और मुश्किल हो जाती है।इस लए ऐसी परिस्थिति में हमें और बेहतर प्रोफेशनल्स तैयार करने होंगे ।

मी डया घरानों को संस्थान खोलने की जरूरत क्यो?

इस दौड़ में सब से आगे बड़े-बड़ेकॉरपोरेट मी डया घराने नजर आ रहे हैं। उन्होंने खुद अपने मी डया स्कूल खोलदिए हैं। इनमें लाखों रुपए की फीस वसूल कर छात्रों को ट्रेनिंग दी जाती है। खुद का मी डया होने की वजह से ऐसे संस्थान छात्रों को अपनी तरफ लुभाने में काफी कामयाब रहते हैं। टाइम्स ऑफ इं डया, पायनियर, इं डयन एक्सप्रेस, एनडीटीवी, आजतक, दैनिक जागरण और दैनिक भास्कर जैसे संस्थानों इस धंधे मेंबड़े पैमाने पर शा मल हो चुके हैं। मी डया शक्षण के क्षेत्र में धंधेबाजी करने की शुरुआत द टाइम्स ऑफइं डया की मा लक बैनेटकोलमैन कंपनी ने की थी। उन्नीस सौ पचासी में जब राजीव गांधी उदारीकरण की दिशा में आगे बढ़ रहे थे तब इस वशाल मी डया घराने नेभ वष्य की थाह लेते हुए सबसे पहले दिल्ली में टाइम्स सेंटर फॉर मी डयास्टडीज की शुरुआत की। आज यह संस्था टाइम्स सेंटर फॉर मी डया एंड मैनेजमेंटस्टडीज के नाम से जाना जाता है। अब इस संस्थान में टाइम्स स्कूल ऑफजर्न लज्म नाम से नई शाखा की शुरुआत की गई है। यहां से एक साल का कोर्सकरने की फीस दो लाख पैंतीस हजार रुपए वसूली जाती है। इस रकम पर अलग सेस वैस टैक्स भी देना होता है। फॉर्म भरने की फीस अलग है। साथ ही पंद्रहहजार कॉशन मनी भी जमा करना पड़ता है। पर यह समूह कभी प्रतिभाशाली युवाओं को पत्रकार बनाने के लए चुनता था और उन्हें प्र श क्षत कर अपने संस्थान मेंनौकरी दिया करता था। हिंदी और अंग्रेजी के ऐसे कई पत्रकार हैं जो टाइम्स आफ इं डया समूह की इसी प्र शक्षण योजना के तहत पत्रकारिता में आए थे। इन मेंआज के प्र सद्ध अंग्रेजी पत्रकार एमजे अकबर और स्व. एसपी संह भी थे। तब इन प्र शक्षु पत्रकारों को सम्मानजनक स्टाइपेंड के साथ नौकरी भी दी जाती थी। इसी तरह इं डयन एक्सप्रेस समूह का एक्सप्रेस इंस्टीट्यूट ऑफ मी डयास्टडीज भी एक साल का प्रोग्राम इन जर्न लज्म कराता है। इसके लए वह एक लाख 95 हजार रुपए फीस वसूलता है।

पांच हजार सक्युरिटी डपॉजिट है और फॉर्म फीस अलग से। इस समूह ने देश के कई हिस्सों में सरकार से पत्रकारिता के नाम परसस्ती दरों में जमीन ह थया रखी है। दिल्ली-मुंबई-चंडीगढ़ जैसे शहरों मेंइसके पास अरबों रुपए के गगनचुंबी भवन हैं। जिसे इसने कराये पर उठाया हुआहै। अखबार के उसी भवन से अब यह शक्षा का व्यापार भी चलाने लगा है।पत्रकारिता के नाम पर लए गए इन भवनों से आज और भी कई तरह के धंधे चल रहेहैं जिनका पत्रकारिता से कुछ भी लेना-देना नहीं है। भाजपा नेता चंदन मत्रा के स्वा मत्व वाला पायनियर भी सन 2003 से पायनियर मी डया स्कूल चला रहाहै। यहां एक साल के पाठ्यक्रम की फीस अस्सी हजार रुपए है। तकनीकी वकास और पूंजीवादी आ थक नीतियों के परिणामस्वरूप देश मेंटेली वजन मी डया पछले दो दशक से खूब फल-फूल रहा है। एनडीटीवी का उदय औरउत्थान इसी दौर की घटना है। पत्रकारिता की साख को गराने के लए इसकेपत्रकारों और मा लक पर लगातार आरोप लगते रहे हैं। इस समूह के मी डयासंस्थान का नाम है एनडीटीवी ब्रॉडकास्ट ट्रेनिंग प्रोग्राम। दस महीने केकोर्स के लए यहां एक लाख अस्सी हजार रुपए वसूले जाते हैं। बाकी खर्चे अलगसे। यहां के वद्यार्थी बरखा दत्त जैसी रा डया प्रय व्यक्ति से पत्रकारिता की कला और नैतिकता सीखते हैं। हाल ही में अपने एक बड़े हिस्से को बिड़ला को बेच देने वाले इं डया टुडे समूहने भी टीवी टुडे मी डया इंस्टीट्यूट शुरू कया है। यहां एक लाख बीस हजारफीस ली जाती है। वद्या र्थयों को लुभाने के लए यह समूह आजतक और हेडलाइंसटुडे जैसे अपने ब्रैंड का इस्तेमाल करता है। देश में सर्वा धक प्रसार वालाहिंदी अखबार, दैनिक जागरण भी दो हजार चार से नोएडा में जागरण इंस्टीट्यूटऑफ मैनेजमेंट एंड मास कम्युनिकेशन चला रहा है। यहां तीन साल की बैचलर डग्री के लए करीब पांच लाख रुपए और पीजी कोर्स के लए भी लाखों रुपएवसूले जाते हैं। अखबार और टेली वजन चैनलों को क्यों अपने शक्षण संस्थान शुरू करने दियाजा रहा है यह अहम सवाल है। प्रश्न है क्या हर उद्योग इस तरह से अपने यहांकाम आनेवाले क र्मयों के लए प्र शक्षण के संस्थान चला सकता है?

इलेक्ट्रॉनिक मी डया शक्षा को बेहतर बनाने का सुझाव

1. भारत में टीवी पत्रकारिता पर केंद्रित वभाग या सेंटर खुले
2. टीवी पत्रकारिता की शक्षा देने वाले अध्यापकों को समय समय पर प्र शक्षण दी जानी चाहिए।
3. यूजीसी, मी डया संस्थान और मी डया घरानों के बीच एक कमेटी बनाई जानी चाहिए जो टीवी पत्रकारिता की दी जा रही शक्षा का मूल्यांकन करे।
4. टी वी पत्रकारिता के छात्रों को तीन से 6 महीने तक का व्यवाहारिक प्र शक्षण मले
5. तीन से 6 महीने तक की दी जा रही टेली वजन प्र शक्षण पर रोक लगे..ता क पाठ्यक्रम की गुणवत्ता बनी रहे
6. टीवी पत्रकारिता के पठ्यक्रम को लेकर भी मी डय संस्थान और मी डया घरानों के बीच सामंजस्य हो
7. पूरे भारत में टीवी पत्रकारित के प्र शक्षण पाठ्यक्रम का एक सलेबस हो
8. टीवी पत्रकरिता की पढ़ाई के दौरान छात्रों से डॉक्यूमेंट्री, लघु फल्म बनवाया जाय और जो बेहतर हो उसे यूजीसी पुरस्कार दे
9. टीवी पत्रकारिता की पढ़ाई के बाद छात्रों को नौकरी मले इसके लए भी मी डया संस्थान और मी डया घरानों के बीच समझौता हो
10. टीवी पत्रकार और टीवी इंडस्ट्री में 10 साल से ज्यादा काम कर चुते पत्रकारों को अध्यापन कार्य से जोड़ा जाना चाहिए
11. शक्षकों को मी डया उद्योग में हो रहे बदलाव से अप टू डेट रहना होगा

12. सभी फैकल्टी में निय मत शक्षकों को रखा जाए..कम से कम गेस्ट टीचर रखें जाएं

अतएव हम कह सकते हैं क भारत में इसके अलावा भी कई चीजें हो सकती हैं जिसके आधार पर इलेक्ट्रॉनिक मी डया की शक्षा को और बेहतर बनाया जा सकता है ।बस जरूरी है सही तालमेल की ।

संदर्भ

1. नंदा वर्तिका(2009)-' बिन शक्षक सब सून' मी डया मीमांसा (अक्टूबर-दिसंबर 2009) में प्रका शत : माखनलाल चतुर्वेदी पत्रकारिता व व, भोपाल

2. जोशी स्मृति (2009): ' अहम होती है पत्रकारिता शक्षण की भू मका' मी डया मीमांसा (अक्टूबर-दिसंबर 2009) में प्रका शत : माखनलाल चतुर्वेदी पत्रकारिता व व, भोपाल

3. अग्रवाल दीप शखा(2009): ' प्र शक्षण के नाम पर क्या मल रहा है? मी डया मीमांसा (अक्टूबर-दिसंबर 2009) में प्रका शत : माखनलाल चतुर्वेदी पत्रकारिता व व, भोपाल

4. चतुर्वेदी ऊमेश **(2009)** : 'तकनीक और वैचारिकता का अंतर्द्वंद' मी डया मीमांसा (अक्टूबर-दिसंबर 2009) में प्रका शत : माखनलाल चतुर्वेदी पत्रकारिता व व, भोपाल

5. संह डॉ देवव्रत (2009) : इलेक्ट्रॉनिक मी डया शक्षण की बदलती वधाएं: मी डया मीमांसा (अक्टूबर-दिसंबर 2009) में प्रका शत : माखनलाल चतुर्वेदी पत्रकारिता व व, भोपाल

6. दयाल डॉ मनोज एवं कुमार पंकज **(2009)** : मी डया शक्षा में शोध की जरूरत: मी डया मीमांसा (अक्टूबर-दिसंबर 2009) में प्रका शत : माखनलाल चतुर्वेदी पत्रकारिता व व, भोपाल

7. हरिवंश , संपादक , प्रभात खबर(2009) योग्य पत्रकार: फेसबुक वॉल

8. तिवारी मनीष, (26 अगस्त 2013),पत्रकारोंके लएपरीक्षाहो:खबर भारती

9. कुमार कुलदीप(26 अगस्त 2013), जनसत्ता: पत्रकारिता प्र शक्षण

I. 10. कुमार मनोज, संपादक, समागम(4 अगस्त 2013) समाचारफॉरमी डया डॉट कॉम: पत्रकारों की शक्षा नहीं, श क्षत होना ज्यादा जरूरी'

II.

11. दैनिक भास्कर, रायपुर(5 मई 2011) , मी डया शक्षा: भ वष्य एवं दिशा, राज्यपाल शेखऱ दत्त का उद्बोधन

12. थानवी ओम, संपादक, जनसत्ता(2013) (जानकी पुल ब्लॉग से : पत्रकारिता की शक्षा गैर पत्रकार कैसे देते हैं ?

13. Bhadas4media.com

14. Samachar4media.com

15. अमानी शरण, (दिसंबर 2012) मी डया शक्षा के पुरोधाओं में से एक प्रो. के. ई. ईपन का साक्षात्कार,

16. उत्तराखंड ओपन व व, पीजीडीजेएमसी(10), द् वतीय, इलेकट्रॉनिक एवं साईबर मी डया

रजनीश कुमार झा
शोध छात्र, मेवाड़ वश्व वद्यालय, चत्तौड़गढ़, राजस्थान.